# जन्मदिन के उत्सव मनाना

## الاحتفال بأعياد الميلاد

[ **हिन्दी** – Hindi – هندي ]

मुहम्मद सालेह अल-मुनज्जिद
مركز التميز البحثي في فقه القضايا المعاصرة

अनुवादः अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह
ترجمة : عطاء الرحمن ضياء الله

2014 - 1436
IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

**मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।**

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

# जन्मदिन के उत्सव मनाना

## मुद्दे की रूपरेखाः

हाल के वर्षों में बहुत से मुस्लिम समुदायों में नए ईसवी साल के प्रवेश का जश्न मनाने की प्रथा प्रचलित हो गई है। यह एक ऐसा अवसर है जिसका ईसाई लोग जश्न मनाते हैं, जो हर वर्ष 25 दिसंबर से आरंभ हो कर अगले वष 5 जनवरी तक रहता है। इन दिनों में से कुछ का सीधा संबंध कुछ ईसाई दलों के इस दावा से है कि उस दिन मसीह अलैहिस्सलाम का जन्म

हुआ था। जबकि कुछ का संबंध नव वर्ष के प्रवेश से है। इसीलिए ईसाई और उनके अलावा यहूदी, मजूसी (अग्नि पूजक) और जिनका कोई धर्म नहीं है, इसका जश्न मनाते हैं।

इस मुद्दे से अभिप्राय नए साल की पूर्व संध्या, अर्थात जनवरी के महीने की पहली रात का जश्न मनाना है, क्रिसमस का जश्न नहीं जो कि दिसंबर के महीने की पच्चीसवीं तारीख की रात है, और वह बिना सन्देह के ईसाइयों के त्योहारों में से एक त्योहार है।

तो एक मुसलमान के लिए नए ईसवी वर्ष के प्रवेश का जश्न मनाने का क्या हुक्म है?

## मुद्दे का हुक्मः

ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का जन्मदिन (क्रिसमस) मनाना हराम (वर्जित) है। क्योंकि इबादतों के मामले में मूल सिद्धांत तौक़ीफ यानी शरीअत के प्रमाणों (कुरआन एवं हदीस के नुसूस) की प्रतिबद्धता है। अतः किसी के लिए इस बात की अनुमति नहीं है कि वह अल्लाह की उपासना ऐसी चीज़ के द्वारा करे जिसे अल्लाह ने धर्म संगत नहीं किया है। आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जिसने हमारे इस (धर्म के) मामले में कोई ऐसी चीज़ अविष्कार की जो उसमें से नहीं है तो वह अस्वीकृत है।'' इसे बुखारी (हदीस संख्या : 2697) और मुस्लिम (हदीस संख्या : 1718) ने रिवायत किया है। इसलिए किसी का भी जन्मदिन समारोह आयोजित करना जायज़ नहीं है ; क्योंकि वह एक बिदअत (नवाचार) है। ईद

मीलाद यानी जयंती या जन्मदिन का उत्सव, अल्लाह के धर्म में नयी अविष्कार कर ली गई इबादतों की एक प्रकार है। अतः उसे किसी भी व्यक्ति के लिए करना जायज़ नहीं है, चाहे उसका स्थान या जीवन में उसका योगदान कितना ही बड़ा क्यों न हो। चुनाँचे सबसे सम्मानित सृष्टि और सर्वश्रेष्ठ सन्देष्टा मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह – सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम – के बारे में कहीं भी प्रमाणित नहीं है कि आप ने अपने जन्मदिन के लिए समारोह आयोजित किया। या अपनी उम्मत का इसकी ओर मार्ग दर्शन किया हो। तथा पैगंबर – सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम – के बाद इस उम्मत के सबसे श्रेष्ठ जन आपके खुलफा (उत्तराधिकारी) और सहाबा हैं, परंतु उनके बारे में भी यह प्रमाणित नहीं है कि उन्हों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्मदिन के अवसर पर, या उनमें से किसी सहाबी के जन्म दिवस के लिए समारोह आयोजित किया हो। जबकि सारी भलाई व कल्याण उनके रास्ते की और जो कुछ उन्हों ने अपने नबी की पाठशाला से अर्जित किया है, उसकी पैरवी करने में है। इसके अतिरिक्त इस बिदअत के अंदर यहूदियों और ईसाइयों और उनके अलावा अन्य काफिरों (नास्तिकों) की, उनके अविष्कार कर लिए गए त्योहारों में समानता अपनाना पाया जाता है।

मुसलमानों पर – चाहे वे पुरूष हों या महिला – सभी प्रकार की बिदअतों से उपेक्षा करना और सावधान रहना अनिवार्य है। और – अल्लाह का शुक्र है कि – इस्लाम धर्म में प्रयाप्ति है, और वह संपूर्ण है। अल्लाह तआला का कथन है :

﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا ۚ﴾ [المائدة :٣]

''आज मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म संपूर्ण कर दिया, और अपनी नेमतें तुम पर पूरी कर दीं और इस्लाम को तुम्हारे लिए धर्म स्वरूप पसन्द कर लिया।''
(सूरतुल मायदा : 3)

अल्लाह ने आदेशों को निर्धारित कर और निषिद्ध (वर्जित) चीज़ों से मना कर हमारे लिए धर्म को परिपूर्ण कर दिया है। इसलिए लोगों को किसी बिदअत (नवाचार) की आवश्यकता नहीं है कि कोई उसे गढ़कर पेश करे, न तो जन्मदिन उत्सव की और न हीं इसके अलावा की। अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जन्मदिन का उत्सव मनाना, या अबू बक्र सिद्दीक़, या उमर फारूक़, या उसमान, या अली, या हसन, या हुसैन, या फातिमा, या बदवी और शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी, या फलाना या फलानी के जन्मदिन का जश्न मनाना, इन सब का कोई आधार नहीं है, और यह सब घृणित हैं, और यह सबके सब निषिद्ध और वर्जित हैं तथा यह सब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान : ''हर बिदअत पथ भ्रष्टता (गुमराही) है।'' (इसे मुस्लिम – हदीस संख्या : 1435 – ने रिवायत किया है) के अंतर्गत आता है। सो, मुसलमान के लिए इन बिदअतों को करना जायज़ नहीं है, अगरचे करने वाले लोग इसे कर रहे हों। क्योंकि लोगों का करना इसे मुसलमानों के लिए

धर्मसंगत (वैध) नहीं बना सकता, तथा लोगों का कृत्य आदर्श नहीं है, सिवाय इसके कि वह शरीअत के अनुकूल हो। लोगों के कार्यों और उनके विश्वासों (मान्यताओं) को शरीअत के मीज़ान पर पेश किया जायेगा और वह अल्लाह की किताब और उसके पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत है। चुनांचे जो चीज़ उन दोनों के अनुकूल है उसे स्वीकार किया जायेगा। और जो उनके खिलाफ है उसे त्याग कर दिया जायेगा। जैसाकि अल्लाह तआला का फरमान है :

﴿فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّـهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّـهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا﴾ [النساء : ٥٩]

''यदि तुम किसी चीज़ के बारे में मतभेद कर बैठो तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ लौटाओ, यदि तुम अल्लाह तआला और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो, यह बेहतर और परिणाम के एतिबार से बहुत अच्छा है।''

(सूरतुन्निसा : 59)

संदर्भ :

1– फतावा व मक़ालात मुतनौविआ, शैख इब्ने बाज़, (4/285).

2– फतावा स्थायी समिति (3/84), फत्वा संख्या : (2008).

स्रोतः अल-मौसूअतुल मुयस्सरतो फी फिक़्हिल क़ज़ाया अल-मुआसिरह (पृष्ठः १६५-१६७)